बाईबल को खोलने की चाबियाँ !

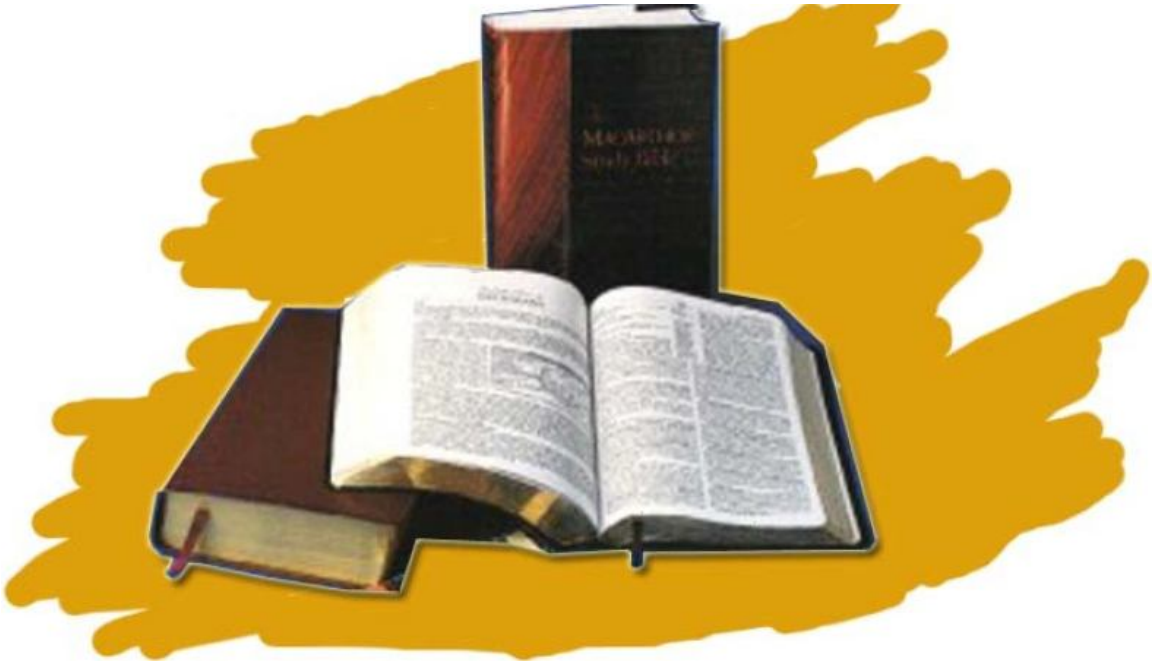

कृपया अपनी बाईबल के हर एक वचन को ध्यान से और पूरी तरह से पढ़ें।

ज्यादातर वचन अंग्रेजी की किंग्स जेम्स वर्शन की बाईबल से लिए गए हैं।

आज हम पवित्रशास्त्र के विषय को देखेंगे - **बाइबिल**

और ये देखेंगे कि बाईबल को कैसे पढ़ा और समझा जा सकता है।

जैसा कि, **सभी** स्वीकार करेंगें, ये एक आसानी से समझ में आनेवाली पुस्तक **नहीं** हैं! हकिकत ये है कि मुशिकल से ही कोई ऐसा होगा जो सचमुच में ये माने कि वो **पूरी** बाईबल को जानता और समझता है!

आइये हम अपनी पढ़ाई को आरंभ करे ये देखते हुए की "बाईबल" शब्द का **क्या** मतलब है ?

ये शब्द **ग्रीक** भाषा के "बिब्लोस" शब्द से आता है, जिसका अर्थ है -पुस्तक!

किसकी पुस्तक? **परमेश्वर की पुस्तक**!

कितना सरल है और कितना प्रभावशाली है!

परमेश्वर ने एक पुस्तक लिखी जो उनके वचन है पूरी मानवजाति के लिए!

दुनिया में बहुत सारे धर्मों में बहुत सारे ईश्वरों की बहुत सी पुस्तकें हैं, जिन्हें **पवित्र पुस्तक** कहा जाता है।

हिन्दुओं की पवित्र पुस्तकों को वेद कहते हैं -

रिग वेद, यजुर वेद,साम वेद और अर्थ वेद।

लेकिन बाईबल को हिन्दी में **'सत्य वेद'** या **'सच्चाई की पुस्तक'** कहते हैं।

इससे पहले की हम **बाईबल को खोलने की चाबियाँ पढ़ें**, और **बाईबल को समझें**, आइये पहले बाईबल के बारे में कुछ **तथ्यों** का अध्ययन करें और बाईबल की **संरचना** के बारे में विवरण देखें -

पवित्र शास्त्र के दो भाग हैं-

प्रभु यीशु के आने से पहले ➪ **पुराना** नियम,

प्रभु यीशु के आने के बाद ➪ **नया** नियम।

पुराने नियम में **39 किताबें** हैं जबकि **नए** नियम में **27 किताबें** हैं!

बाइबिल में **कुल** मिलाकर **66** किताबें हैं - ये किताबों की किताब है!

कुछ ईसाई जैसे कि रोमन कैथोलिक मित्र लोगों का यह मानना है कि बाइबिल में 66 से **ज्यादा पुस्तकें** हैं!

इस विवाद में पड़ने की जगह कि कौन सही है, आइये हम परमेश्वर के वचन में ही इसका उत्तर ढूँढें! ये बात

लैव्यव्यवस्था 24: 5-7 “और तू मैदा ले कर बारह रोटियां पकवाना, प्रत्येक रोटी में एपा का दो दसवां अंश मैदा हो। तब उनकी दो पांति करके, एक एक पांति में छः छः रोटियां, स्वच्छ मेज पर यहोवा के सामने धरना। और एक एक पांति पर चोखा लोबान रखना, कि वह रोटी पर स्मरण दिलाने वाला वस्तु और यहोवा के लिये हव्य हो”

वचनों में साबित हो जाती है जहाँ **'भेंट की रोटियाँ'**, तम्बू के **पवित्रस्थान** में **दो पंक्तियों में छह छह रोटियाँ** करके रखी गई हैं -ये **66 पुस्तकों** को दर्शाता है जो कि परमेश्वर से मिली 'आत्मिक रोटी है'।

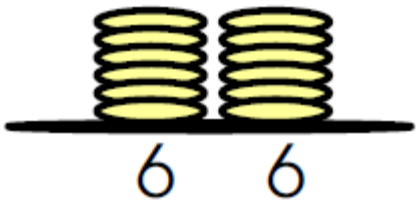

पुराने नियम की **पहली पाँच** पुस्तकें **पेंटाटियोच** कहलाती है, जिन्हे मूसा ने लिखा था।

यहूदी इन पाँच पुस्तकों को '**तोरा**' भी कहते हैं।
ये उनके लिए बहुत पवित्र है -परमेश्वर से मिला **कानून**!

बाईबल को लिखने में **अविश्वसनीय 1700 वर्ष** लगे हैं!

पुराने नियम को लिखने में **1600 वर्ष** लगे हैं

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com

और नए नियम को लिखने में **100 वर्ष** लगे हैं।
पूरी दुनिया में कोई भी दूसरी ऐसी पुस्तक नहीं जिसकी संरचना में इतने सारे वर्ष लगे हों!

बाईबल में सबसे प्रथम पुस्तक कौन सी है?
'अय्युब' की पुस्तक सर्व **प्रथम** लिखी गयी पुस्तक है और **प्रकाशितवाक्य अंतिम** में लिखी गयी पुस्तक है जिसे 96 A.D में लिखा गया था।

परमेश्वर के वचनों को इस पुस्तक में दर्ज करने के लिए परमेश्वर ने 40 अलग अलग लेखकों को माध्यम बनाकर उपयोग में लाया है। इन लेखकों का अलग-अलग पृष्ठभूमि था।

लुका डॉक्टर (वैध) था । (कुलुस्सियों 4:14 --प्रिय वैद्य लूका और देमास का तुम्हें नमस्कार।)

मत्ती चुंगी लेने वाला था। (लुका 5:27,28
27 और इसके बाद वह बाहर गया, और लेवी नाम एक चुंगी लेने वाले को चुंगी की चौकी पर बैठे देखा, और उस से कहा, मेरे पीछे हो ले। तब वह सब कुछ छोड़कर उठा, और उसके पीछे हो लिया।)

दाऊद एक चरवाहा था जो बाद में राजा बना । (1 शमूएल 16:19 तब शाऊल ने दूतों के हाथ यिशै के पास कहला भेजा, कि अपने पुत्र दाऊद को जो भेड़-बकरियों के साथ रहता है मेरे पास भेज दे।)

सोलोमन एक राजा था । (1 राजा 2:12 तब सुलैमान अपने पिता दाऊद की गद्दी पर विराजमान हुआ और उसका राज्य बहुत दृढ़ हुआ।)

मूसा उच्च शिक्षित था और उसे मिस्र के फारोह के बाद के पद के लिए परिक्षण दिया गया था। (निर्गमन 2:10 जब बालक कुछ बड़ा हुआ तब वह उसे फिरौन की बेटी के पास ले गई, और वह उसका बेटा ठहरा; और उसने यह कहकर उसका नाम मूसा रखा, कि मैं ने इस को जल से निकाल लिया॥)

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है
For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com

पौलुस फारसी थे । (प्रेरितों के काम 23:6 तब पौलुस ने यह जानकर, कि कितने सदूकी और कितने फरीसी हैं, सभा में पुकारकर कहा, हे भाइयों, मैं फरीसी और फरीसियों के वंश का हूं, मरे हुओं की आशा और पुनरुत्थान के विषय में मेरा मुकद्दमा हो रहा है।)

अमोस एक गरीब चरवाहा था । (अमोस 7:14 आमोस ने उत्तर देकर अमस्याह से कहा, मैं न तो भविष्यद्वक्ता था, और न भविष्यद्वक्ता का बेटा; मैं तो गाय-बैल का चरवाहा, और गूलर के वृक्षों का छांटनेहारा था...।)

पतरस और **यहून्ना** मछवारे थे, आदि, आदि (मत्ती 4:18-21 उस ने गलील की झील के किनारे फिरते हुए दो भाइयों अर्थात शमौन को जो पतरस कहलाता है, और उसके भाई अन्द्रियास को झील में जाल डालते देखा; क्योंकि वे मछवे थे। और उन से कहा, मेरे पीछे चले आओ, तो मैं तुम को मनुष्यों को पकड़ने वाला बनाऊंगा। वे तुरन्त जालों को छोड़कर उसके पीछे हो लिए। और वहां से आगे बढ़कर, उस ने और दो भाइयों अर्थात जब्दी के पुत्र याकूब और उसके भाई यूहन्ना को अपने पिता जब्दी के साथ नाव पर अपने जालों को सुधारते देखा; और उन्हें भी बुलाया ।)

बाईबल के बारे में सबसे **अदभुत, अविश्वसनीय और आश्चर्यजनक** बात यह है कि यघपि 40 अलग अलग अनुभवों और ज्ञान की सृष्ठभूमी वाले लेखकों के द्वारा ये पुस्तक लिखे जाने पर भी पूरी पुस्तक में कहीं भी कोई प्रतिवाद नहीं है और पूरी पुस्तक **संपूर्ण रीती से पूरे तालमेल** में है।

इस प्रकार हम ये समझ पाते हैं कि बाईबल के सही लेखक परमेश्वर खुद हैं जिन्होनें मनुष्य को सहायक के रूप में उपयोग किया है!!

हम इस मामले को निम्नलिखित वचनों में पढ़ के पक्का कर सकते हैं -

इब्रानियों 1:1,2; 2 तीमुथियुस 3:16

तेरा वचन सत्य है 📖 तेरा वचन सत्य है 📖 तेरा वचन सत्य है

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com

पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप दादों से थोड़ा थोड़ा करके और भांति भांति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें कर के। इन दिनों के अन्त में हम से पुत्र के द्वारा बातें की, जिसे उस ने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उस ने सारी सृष्टि रची है।

हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है।

इसके बाद हम ये देखतें हैं कि दुनियाभर में लिखी गई अलग अलग पुस्तकों में से बाईबल **सबसे ज्यादा पढ़ी जाने वाली पुस्तक है**, यहाँ तक कि जो ईसाई नहीं हैं,वे नेता जैसे कि महात्मा गाँधी और दलाई लामा और जवाहरलाल नेहरू आदि लोगों ने भी इसे पढ़ा है।

चाहे मानो या न मानो!!

हकिकत यह है कि भारत की आज़ादी को बाईबल के द्वारा हासिल किया गया था!

महात्मा गाँधी -"राष्ट्रपिता" बहुत बड़ी मात्रा में बाइबिल से प्रभावित थे। वे खासकर बाईबल के एक वचन से प्रभावित थे -

मत्ती 5:39 परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि बुरे का सामना न करना; परन्तु जो कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उस की ओर दूसरा भी फेर दे।

ये वचन **'अहिंसा** के **आंदोलन'** का **आधार** बन गया था जिसके द्वारा भारत को आजादी मिली। यहाँ तक कि अभी भी भारत के पार्लियामेंट हाउस के ऊपर ये वचन लिखा हुआ है। लेकिन बहुत कम लोग ये जानते हैं कि यह बाईबल का वचन है। ज्यादातर लोग यही सोचते हैं कि ये महात्मा गाँधी की बाते हैं।

☞ इसके बाद हम यह देखते हैं कि बाइबिल सब से **ज्यादा छापी गई** पुस्तक है। **1454 A.D.** में बाईबल का पहला सृष्ट छापा गया था। अब ये पुस्तक पूरी दुनिया की **2000 से भी अधिक भाषाओं** में छापी जा चुकी है।

☞ लेकिन इन सब के बावजूद भी-

बाईबल अलग अलग भाषाओँ और इसके चिन्हों के साथ सबसे **ज्यादा गलत समझी** जाने वाली पुस्तक है। यहाँ तक कि **बहुत** से इसाई भी बाईबल पढ़के कुछ का कुछ समझते हैं!

हाँ, बाईबल परमेश्वर की ओर से मनुष्य को दिया गया आत्मिक भोजन है।

हाँ, बाईबल परमेश्वर की ओर से मनुष्य को दिया गया आत्मिक भोजन है।

आइए हम इसके बारे में निम्नलिखित वचनों में पढ़ें -

मत्ती 4:4; व्यवस्थाविवरण 8:3; यिर्मयाह 15:16

"उस ने उत्तर दिया; कि लिखा है कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा"।

"... इसलिये कि वह तुझ को सिखाए कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं जीवित रहता, परन्तु जो जो वचन यहोवा के मुंह से निकलते हैं उन ही से वह जीवित रहता है"

"जब तेरे वचन मेरे पास पहुंचे, तब मैं ने उन्हें मानो खा लिया, और तेरे वचन मेरे मन के हर्ष और आनन्द का कारण हुए..."

और ठीक उस तरह से जैसे कि शारीरिक भोजन में **बहुत सी विभिन्नताएँ होती है** और मनुष्य की बढ़ोतरी के लिए अलग अलग उम्र में अलग अलग पोषण की जरूरत होती है, वैसे ही **आत्मिक भोजन** के साथ भी है। **ऐसा कैसे है, आप पुछ सकते हैं?**
हम इसका उत्तर निम्नलिखित वचन में देख सकते हैं -

इब्रानियों 5:12-14 "समय के विचार से तो तुम्हें गुरू हो जाना चाहिए था, तौभी क्या यह आवश्यक है, कि कोई तुम्हें परमेश्वर के वचनों की आदि शिक्षा फिर से सिखाए ओर ऐसे हो गए हो, कि तुम्हें अन्न के बदले अब तक दूध ही चाहिए। क्योंकि दूध पीने वाले बच्चे को तो धर्म के वचन की पहिचान नहीं होती, क्योंकि वह बालक है। पर अन्न सयानों के लिये है, जिन के ज्ञानेन्द्रिय अभ्यास करते करते, भले बुरे में भेद करने के लिये पक्के हो गए हैं"॥

हाँ! इस वचन में पौलुस **स्पष्ट शब्दों** में 'आत्मिक भोजन' के दो प्रकार बताते हैं -

'दूध' और **'अन्न'** ।

जैसे बच्चे **दूध पीते** हुए धीरे -धीरे अन्न खाना सीखते हैं-

ठीक उसी तरह आत्मिक **बढ़ोतरी** भी होनी चाहिए।

लेकिन जैसा की प्रेरित कहते हैं, बहुत से लोग **बिना किसी उन्नति** के पाए जाते हैं, जैसा की वचनों में लिखा है -

"समय के विचार से तो तुम्हें गुरू हो जाना चाहिए था, तौभी क्या यह आवश्यक है, कि कोई तुम्हें परमेश्वर के वचनों की आदि शिक्षा फिर से सिखाए..."

'दूध' का मतलब क्या है?

इसका उत्तर हमें निम्नलिखित वचन में मिलता है -

इब्रानियों 6:1-3 "इसलिये आओ मसीह की शिक्षा की आरम्भ की बातों को छोड़ कर, हम सिद्धता की ओर आगे बढ़ते जाएं, और मरे हुए कामों से मन फिराने, और परमेश्वर पर विश्वास करने। और बपतिस्मों और हाथ रखने, और मरे हुओं के जी उठने, और अन्तिम न्याय की शिक्षारूपी नेव, फिर से न डालें। और यदि परमेश्वर चाहे, तो हम यही करेंगे"।

हाँ! मसीह की **शिक्षा कि आरम्भ की बातें** परमेश्वर के **व**चनों का **'दूध'** है।

यह बात प्रेरित पतरस ने भी एक वचन में व्यक्त की है -

1 पतरस 2:2 "नये जन्मे हुए बच्चों की तरह निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिये बढ़ते जाओ"।

हाँ! सारी **आत्मिक उन्नति** की शुरुआत 'दूध' से होनी चाहिए जैसा कि **शारीरिक उन्नति** में होता है।

आइए अब हम सबसे **महत्वपूर्ण** सवाल को देखें, कि बाईबल को **कैसे** पढ़ना है? यह कितनी कठिन पुस्तक है समझने के लिए। यह एक बन्द पुस्तक जान पड़ती है! इसलिए निश्चय ही इसे खोलने के लिए चाबियाँ होगी!

बाईबल को खोलने की चाबियाँ क्या है?

हाँ! परमेश्वर के अनुग्रह से **आज** हम बाईबल को खोलने की **तीन** “सुनहरी चाबियों” के बारे में पढेंगें।

'सुनहरा' यहाँ पर **दिव्य** को दर्शाता है क्योंकि यह चाबियाँ परमेश्वर की है।

आइए हम शुरू करें -

पहली सुनहरी चाबी

यशायाह 28:10 आज्ञा पर आज्ञा, आज्ञा पर आज्ञा, नियम पर नियम, नियम पर नियम थोड़ा यहां, थोड़ा वहां॥

क्या आप इस वचन का मतलब समझ पाए हैं? अच्छा? साधारणतः उत्तर 'नहीं' ही होता है। इस वचन को बेहतर समझने के लिए हमे ये किस संदर्भ में लिखा गया है, वह जानना होगा। आइए हम इसके पहले का एक वचन देखें।

यशायाह 28:9 “वह किस को ज्ञान सिखाएगा, और किस को अपने समाचार का अर्थ समझाएगा? …”

हाँ! हम ये जान गए कि, यशायाह 28:10 वचन “नियम पर नियम, नियम पर नियम थोड़ा यहां, थोड़ा वहां ॥“ परमेश्वर के उपदेशों का अर्थ समझने के सन्दर्भ में लिखा है।

पवित्रशास्त्र के वचनों की पढ़ाई करने के लिए यशायाह 28:10 वचन पहली सुनहरी चाबी है।

'आज्ञा पर आज्ञा', और

'नियम पर नियम'

इसका मतलब क्या है ? -

यहाँ पर “आज्ञा” का मतलब है **पढ़ाईयाँ** या **'विषय'** और “नियम” का मतलब है **'वचन'** । किसी भी शिक्षा या **विषय** की पढाई करने के लिये ये जरूरी है कि ये वचन एक उचित सुनियोजित क्रम में हों। हर एक विषय के लिये सही नियम है मतलब वचनों का सही क्रम है।

बाईबल के किसी भी विषय की पढाई के वचन पूरी बाईबल में यहाँ -वहां बिखरे हुए हैं। जैसा कि लिखा है …..'

… 'थोड़ा यहाँ', 'थोड़ा वहां' ।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com

➡ इसका मतलब क्या है?

आइए हम उदहारण लें --क्या आप जानते हैं कि बाईबल एक मनुष्य के बारे में बात करती है, जो कभी भी नहीं मरा?

हाँ! उसका नाम ' हनोक ' है।

'हनोक ' की कहानी, पूरे बाईबल में केवल तीन वचनों में लिखी गयी है और यह तीन वचन एक एक कर के पूरी बाईबल में अलग -अलग जगह बिखरे हुए हैं। पहला वचन हमें इस वचन में मिलता है -

उत्पत्ति 5:24 "और हनोक परमेश्वर के साथ साथ चलता था; फिर वह लोप हो गया क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया",

दूसरा वचन है -

इब्रानियों11:5 "विश्वास ही से हनोक उठा लिया गया, कि मृत्यु को न देखे, और उसका पता नहीं मिला; क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया था, और उसके उठाए जाने से पहिले उस की यह गवाही दी गई थी, कि उसने परमेश्वर को प्रसन्न किया है।"

और आखरी वचन है -

"यहूदा 1:14 और हनोक ने भी जो आदम से सातवीं पीढ़ी में था, इन के विषय में यह भविष्यद्ववाणी की, कि देखो, प्रभु अपने लाखों पवित्रों के साथ आया।"

मैं है।

"थोड़ा यहाँ, थोड़ा वहां" का सिद्धान्त यही है।

फिर से हम ये देखेंगें कि **यशायाह 28:10** वचन में एक बात को दो बार क्यों लिखा गया है?

"... आज्ञा पर आज्ञा, आज्ञा पर आज्ञा, नियम पर नियम, नियम पर नियम थोड़ा यहां, थोड़ा वहां॥"

जैसा कि हमने पहले से ही देख लिया है कि **"आज्ञा"** शब्द का मतलब है **'शिक्षा'** या **'विषय'** और **"नियम"** शब्द का मतलब है **"वचन"**। यह सारी बातें इस वचन में **दो बार** इसलिए लिखी गयी है ताकि हम ये समझ जाएँ कि **सभी बाईबल की पढ़ाई** करने के लिए ये जरूरी है कि परमेश्वर के वचनों के **दोनो भागों को पढ़ा जाये** --**पुराना नियम** और **नया नियम**।

तो फिर वचन बाईबल में "थोड़े यहाँ और थोड़े वहां" क्यों हैं?

आइये हम इसका कारण निम्नलिखित वचन में देखें -

यशायाह 34:17–"उसी ने उनके लिये चिट्ठी डाली, उसी ने अपने हाथ से डोरी डालकर उस देश को उनके लिये बांट दिया है; वह सर्वदा उनका ही बना रहेगा और वे पीढ़ी से पीढ़ी तब उस में बसे रहेंगे"

इस वचन में 'चिट्ठी' डालना समझने में कुछ विचित्र जान पड़ता है!

परमेश्वर सच्चाई के लिए किस प्रकार से 'चिट्ठी' डालेंगें?

साधारणतः, "चिट्ठी" या पर्ची डालने के लिए कोई एक पन्ना लेकर उसे छोटे -छोटे टुकड़ों में फाड़ता है और हर एक टुकड़े पर एक-एक नाम लिखता है। फिर जो भी लोग उसमें शामिल है सबका नाम लिखने के बाद उस छोटी -छोटी "चिट्ठी" या पर्ची को डाला जाता है! ठीक उसी प्रकार से, परमेश्वर ने <u>अपने प्रत्येक सच्चाई के उपदेशों या विषयों</u> से जुड़े वचनों के हर वाक्य को अलग -अलग पर्चियों में लिखकर चिट्ठी डाली है। उन्होंने एक विषय से जुड़े सभी वचनों को छोटे -छोटे "टुकड़ों" या कि "वचनों" में बाँट दिया है।

हाँ! परमेश्वर ने खुद सच्चाई को छोटे छोटे वाक्यों या वचनों में बाँट दिया है और फिर एक विषय से जुड़े सभी वचनों को बाईबल की 66 पुस्तकों में छिपाकर बिखेर दिया है।

यह सच्चाई पर ताला लगाने का एक दिव्य तरिका है।

परमेश्वर ने सच्चाई को ताले में क्यों बन्द करके रखा है?

इसलिए क्योंकि सच्चाई बहुत **बहुमूल्य** है और इसका न तो निरादर होना चाहिए न ही गलत उपयोग होना चाहिए ।

इसी प्रकार मनुष्य भी अपने **बहुमूल्य सामानों** को अलमारी में **ताले में बन्द करके** या गुप्त जगह में छुपा कर रखते हैं।

तो सोचिए परमेश्वर की सच्चाईयां कितनी ज्यादा बहुमूल्य होगी?

इस प्रकार हम ये देखते हैं कि बाईबल ताले में **'बन्द'** पुस्तक है और एक **'गुप्त'** पुस्तक है।

तो हम इस पुस्तक को कैसे खोलें?

इसका उत्तर इस वचन में पढ़ते हैं -

यशायाह 34:16 "यहोवा की पुस्तक से ढूंढ़कर पढ़ो: इन में से एक भी बात बिना पूरा हुएन रहेगी; कोई बिना जोड़ा न रहेगा। क्योंकि मैं ने अपने मुंह से यह आज्ञा दी है और उसी की आत्मा ने उन्हें इकट्ठा किया है।"

हाँ! यहाँ पर हम ये देखते हैं की किसी को भी एक विषय से जुड़े परमेश्वर के वचनों को यहोवा की पुस्तक से ढूंढकर पढ़ना है।

यहाँ पर **यशायाह 34:16** वचन में लिखा है की -

कोई बिना जोड़ा न रहेगा!

इस वचन का क्या मतलब है?

यहाँ पर हम जानते हैं की 'जोड़ा' का मतलब है 'दो '।

उदहारण के लिये 'पुरुष ' और 'स्त्री ' मिलकर एक जोड़ा बनाते हैं। उसी तरह बिजली के तार में एक 'पॉजिटिव' और एक 'नेगेटिव ' तार मिलकर जोड़ा बनाते हैं।

लेकिन यशायाह 34:16 वचन में जो जोड़ा है,

उसका मतलब क्या है?

यहाँ पर मतलब यह है कि हर एक सवाल से जुड़े हुए वचन के लिए उसके जवाब का वचन भी बाईबल में ही है।

ये सवाल का वचन और जवाब का वचन मिलकर एक जोड़ा बनाते हैं।

लेकिन वचनों के जोड़े को ढूंढ़कर इकट्ठा करने के लिए हमें परमेश्वर की पवित्र आत्मा चाहिए। (**यहून्ना 16:13**),

एक विषय से जुड़े वचनों को जो कि पूरी बाईबल में 66 पुस्तकों में बिखरे हैं, उन्हें ढूंढ़कर एक सही क्रम में जानने के लिए हमे परमेश्वर की पवित्र आत्मा चाहिए।

इससे पहले की हम बाईबल को कैसे पढ़ना है उसकी दूसरी सुनहरी चाबी के बारे में पढ़ें, आइए हम एक रुचिकर विषय को वचनों में देखें और और इसके मतलब को समझे - (**यशायाह 28:10,13**) यहाँ पर ध्यान दें कि **दोनों** वचनों में कितनी समानता है **लेकिन** फिर भी एक बहुत बड़ा **अन्तर** है। ये वचन क्या कहते हैं ? इनका क्या मतलब है?

ये वचन दो तरह की बाईबल की पढ़ाइयों के बारे में बात रहे हैं।

क्योंकि हम (**यशायाह 28:10**) के वचन में पढ़ते हैं -
इस वचन में पढ़ने का जो तरिका बताया गया है वो हमे सच्चाई के ज्ञान में आगे ले जाएगा।
फिर हम अगला वचन
यशायाह 28:13 इसलिये यहोवा का वचन उनके पास आज्ञा पर आज्ञा, आज्ञा पर आज्ञा, नियम पर नियम, नियम पर नियम है, थोड़ा यहां, थोड़ा वहां, जिस से वे ठोकर खाकर चित्त गिरें और घायल हो जाएं, और फंदे में फंस कर पकड़े जाएं॥
भी पढ़ते हैं। अब ये वचन हमे ये बताता है कि बाईबल पढ़ने के जो दूसरे तरीके हैं वो हमे सच्चाई के ज्ञान में पीछे ले जाते हैं या फिर हम सत्य के मार्ग को खो देते हैं!
यहाँ पर इस मतलब को समझाने के लिए जो भाषा का उपयोग किया गया है उस पर ध्यान दें–"वे ठोकर खाकर चित्त गिरे और घायल हो जाए और फन्दे में फँसकर पकडे जाएँ"।
यह वचन **गलत** उपदेशों को दर्शाता है और **असत्य** की **गलतियों** को दर्शाता है।

तब ये सवाल उठता है कि हम कैसे जाने कि सत्य क्या है?

इसका उत्तर हमे

यहून्ना 17:17 "...तेरा वचन सत्य है"।

वचन में मिलता है। इस महत्वपूर्ण मामले को जानने के बाद, अब.....कोई ये कैसे जाने

☞ ... कि सही बाईबल का अध्ययन क्या है?

हाँ! ...इसे हम उपदेशों पर विश्वास को जाँचकर पेहचान सकते हैं।

☞ ये जाँचकर कि क्या ये पढ़ाई वचनों के आधार पर है?

आइये हम वचनों की एक जाँच करें... ➡ "क्या आत्मा को लहू होता है"?

ज्यादातर लोगों का उत्तर होगा --**नहीं**!
लेकिन हम यह पढ़ाते हैं कि आत्मा के लहू **होता है**। क्योंकि हम बाईबल की किंग्स जेम्स वर्शन निम्नलिखित वचन में ऐसा ही पढ़ते हैं--

यिर्मयाह 2:34 तेरे घाघरे में निर्दोष और दरिद्र लोगों के लहू का चिन्ह पाया जाता है; तू ने उन्हें सेंध लगाते नहीं पकड़ा। परन्तु इन सब के होते हु एभी तू कहती है, मैं निर्दोष हूं;

हाँ! बाईबल ये पढ़ाती है कि... **आत्मा के लहू होता है**।

क्या आप हैरान है?

हम **'मनुष्य' की आत्मा** पर विस्तार में भविष्य में पाठ लेंगें।

इसलिए आप **हमेशा** ये जाँचें कि बाईबल की पढाई में आप जो भी पढ़ते हैं क्या वो वचनों पर आधारित? बाईबल खुद गलत उपदेशों के लिए चेतावनी देती है, इसलिए हमेशा ये जाँचें कि किसी भी बात पर भरोसा करने के लिए क्या उससे जुड़े वचन भी हैं बाईबल में?

अब हम बाईबल को पढ़ने की दूसरी सुनहरी चाबी में आते हैं ---

दूसरी सुनहरी चाबी # 2

2 तीमुथियुस 2:15 अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्ज़ित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।

इस वचन का क्या मतलब है?

यहाँ पर एक रहस्य छुपा हुआ है! हम जानते हैं कि मनुष्यों के बीच में लिखने की कई प्रकार की शैली होती है।

... **कविता, नाटक, छंद आदि**

उसी प्रकार परमेश्वर ने भी बाईबल को हर भाषा में **तीन प्रकार की शैली** में लिखा है। हमें, बाईबल **कौन सी शैली में है**, इसे सावधानी से पहचानना है।

हम जब भी पढाई करें तब कौन सा वचन उस भाषा की कौन सी शैली में लिखा गया है, इसे ध्यानपूर्वक परखना बहुत जरूरी है। (सत्य के वचन को ठीक रीती से काम में लाना है।)

1.

भाषा की पहली शैली है -- सरल भाषा (शाब्दिक अर्थ)

उदाहरण: उत्पत्ति 1:1 / मत्ती 1:21

"आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की"।

"वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना; क्योंकि वह अपने लोगों का उन के पापों से उद्धार करेगा"।

बाईबल का ज्यादातर हिस्सा साधारण भाषा में लिखा गया है, जिसे सीधे समझा जा सकता है। इस भाषा की शैली को समझने में कोई भी कठिनाई नहीं होती है। लेकिन हमेशा ये याद रखें कि **पूरी** बाईबल **साधारण भाषा** में **नहीं** लिखी गयी है!!

हाँ! **भाषा की दूसरी शैली है -**

2.

दृष्टान्त की भाषा

बाईबल में **"छोटी -छोटी कहानियाँ"** हैं जिन्हें साधारण भाषा में नहीं लेना है, बल्कि उनका **आत्मिक अर्थ समझना है** -मतलब उन कहानियों के पीछे कोई

आत्मिक संदेशा या महत्व छुपा होता है।

आइए हम एक दृष्टान्त का उदाहरण लेकर इस बात को समझने का प्रयास करें। एक बहुत ही मशहूर दृष्टान्त है बाईबल में जिसपर हम ध्यान करते हैं -

लूका 15:3-7 (खोई हुई भेड़ का दृष्टान्त)

तब उस ने उन से यह दृष्टान्त कहा। तुम में से कौन है जिस की सौ भेड़ें हों, और उन में से एक खो जाए तो निन्नानवे को जंगल में छोड़कर, उस खोई हुईको जब तक मिल न जाए खोजता न रहे? और जब मिल जाती है, तब वह बड़े आनन्द से उसे कांधे पर उठा लेता है। और घर में आकर मित्रों और पड़ोसियों को इकट्ठे करके कहता है, मेरे साथ आनन्द करो, क्योंकि मेरी खोई हुईभेड़ मिल गई है। मैं तुम से कहता हूं; कि इसी रीति से एक मन फिरानेवाले पापी के विषय

में भी स्वर्ग में इतना ही आनन्द होगा, जितना कि निन्नानवे ऐसे धर्मियों के विषय नहीं होता, जिन्हें मन फिराने की आवश्यकता नहीं॥

हाँ! यह एक मशहूर दृष्टान्त है जिसे किसी नए ईसाई के **बपतिस्मा** के समय पढ़ा जाता है। उस नए ईसाई को **"खोई हुई भेड़"** समझा जाता है। बहुत लोग ये सोचते हैं कि **7 वां वचन** एक **अकेले** मनुष्य के पाप और **पश्चाताप** और उसके परमेश्वर की और फिरने के बारे में संकेत कर रहा है।

लेकिन आइये, हम 7 वें वचन को ध्यान से पढ़ें-

"मैं तुम से कहता हूं; कि इसी रीति से एक मन फिरानेवाले पापी के विषय में भी स्वर्ग में इतना ही आनन्द होगा, जितना कि निन्नानवे ऐसे धर्मियों के विषय नहीं होता, जिन्हें मन फिराने की आवश्यकता नहीं"

यदि ये वचन **एक** पापी के विषय में कह रहा है तो "निन्याबे धर्मी कौन हैं जिन्हें मन फिराने की आवयश्कता नहीं"?

क्या दुनिया में **इतने सारे** "धर्मी लोग" हैं?

आइये इसका उत्तर हम निम्नलिखित वचन में देखें -

रोमियों 3:10 "जैसा लिखा है, कि कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं"।

देखा! **पूरी मानवजाति** की अवस्था तो **स्पष्ट** है।

तब ये 99 धर्मी कौन हैं?

अहा, हाँ! ये दृष्टान्त किसी एक पापी मनुष्य की तरफ **बिल्कुल** भी संकेत **नहीं** कर रहा है!

आइये, अब हम इस दृष्टान्त का मतलब देखें--

यीशु यहाँ पर किसी मनुष्य की बात कर
रहें हैं जिसकी 100 भेड़ें हैं।
उन दिनों में सम्पत्ति भेड़ों, ऊँटों आदि की
गिनती के हिसाब से आँकी जाती थी।
उदाहरण: अब्राहम, अय्यूब आदि।
ये वचन परमेश्वर के चित्र को दर्शाता है जो
कि **सभी रचनाओं** के **मालिक** और **सृष्टिकर्ता** हैं,
जिन्हें **भजन संहिता 23:1** में **चरवाहा** भी कहा गया है।

परमेश्वर की भेड़ कौन हैं?

"भेड़" → ये परमेश्वर की बहुत सारी आज्ञाकारी रचनाओं को दर्शाने का चिन्ह है।
100 की संख्या → परमेश्वर की रचनाओं की अलग-अलग **प्रजातियों** को दर्शाता है -- **जानवर, पक्षी, मछली, कीड़े, पौधे, स्वर्गदूत, चेरूबियम, मनुष्य आदी।**
संख्या 100 सारी सृष्टि का एक **पूर्णांक** का प्रतीक है--
…. सारी सृष्टि में 100 से कहीं ज्यादा रचनाएँ हैं!
अब, परमेश्वर की सभी रचनाओं में से, केवल, **एक**... "भेड़" या **प्रजाति** "खो गई" थी --और वह प्रजाति है ….. **मानवजाति**!

वे **पूरी तरह** से एक जाति के रूप में पाप और इसकी मजदूरी मृत्यु में खो चुके हैं! रोमियों 6:23 "क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है"॥

तब परमेश्वर ने क्या किया?

हाँ! उन्होंने उनसे उत्पन्न हुए अपने एकलौते पुत्र यीशु को उस **"खोई हुई भेड़"** को खोजने-- ... **मानवजाति के खोए हुए वंश को**... खोजने के लिए भेजा, जैसा कि हम यहून्ना 3:16 "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए"।
वचन में पढ़ते हैं।
हाँ! हम भविष्य की पढ़ाई में जानेंगें कि परमेश्वर ने **पूरी मानवजाति** के **उद्धार** के लिए क्या **भव्य योजना** बनाई है।
हाँ! और अंत में..... जब पूरी मानवजाति को पाप और मृत्युदण्ड से छुटकारा मिलकर **अनन्त जीवन** मिल जाएगा तो स्वर्ग में बड़ा आनन्द मनाया जायेगा।
इस दृष्टान्त का और भी गहरा मतलब है जिसे हम भविष्य की पढाई में समझेंगें।

लेकिन यह 'दृष्टान्त की भाषा' का एक उदाहरण था...!!

आइये अब हम बाईबल की भाषा में उपयोग में आने वाले **तीसरी** शैली के बारे में पढ़ें -

इशारे या चिन्ह वाली भाषा

यह वैसी भाषा है जिसमे महान भविष्यद्वाणियों को गुप्त रखने के लिए चिन्हों का उपयोग किया जाता है।
'प्रकिशतवाक्य' की पुस्तक **पूरी** तरह से 'चिन्हों' से भरी हुई है जैसा कि हम निम्नलिखित वचन में देखते हैं -
प्रकिशतवाक्य 1:1 "यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य जो उसे परमेश्वर ने इसलिये दिया, कि अपने दासों को वे बातें, जिन का शीघ्र होना अवश्य है, दिखाए: और उस ने अपने स्वर्गदूत को भेज कर उसके द्वारा अपने दास यूहन्ना को बताया"।

बाईबल की अन्य पुस्तकों में भी 'चिन्ह' या 'इशारे' वाली भाषा पाई जाती है -- उदाहरण --यहेजकेल, दानिय्येल, इत्यादि।

हमारे आसपास के वातावरण में **प्रकृति** से जुड़े चिन्हों को बाईबल में उपयोग में लाया जाता है। उदाहरण--**हवा, पानी, पहाड़ी, शहर, बादल, पेड़, घास, कांटे, आग** आदि।

और हर एक इशारे, वादे, शब्द या चिन्ह का **अर्थ** बाईबल में ही लिखा हुआ है।

आइये हम मत्ती 16:6 वचन में उपयोग किए गए-- 'खमीर'

☞ शब्द या चिन्ह का मतलब देखें। इसका उत्तर हमें- मत्ती 16:12 "तब उन को समझ में आया, कि उस ने रोटी के खमीर से नहीं, पर फरीसियों और सदूकियों की शिक्षा से चौकस रहने को कहा था"। वचन में मिलता है।

हाँ! फरीसियों और सदूकियों के उपदेश **झुठे उपदेश** थे, जैसा कि हम प्रेरितों के काम 23:8 "क्योंकि सदूकी तो यह कहते हैं, कि न पुनरुत्थान है, न स्वर्गदूत और न आत्मा है; परन्तु फरीसी दोनों को मानते हैं" वचन में पढ़ते हैं।

> हाँ! इसलिए प्रभु यीशु मसीह हमे बताते हैं कि "खमीर" का मतलब है--झुठी शिक्षाएं और झुठे उपदेश।

आइये हम एक **पूरा वचन** पढ़ें जो इशारे वाली चिन्ह की भाषा में लिखा गया है -- सभोपदेशक 11:1 "अपनी रोटी जल के ऊपर डाल दे, क्योंकि बहुत दिन के बाद तू उसे फिर पाएगा"।

☞ **क्या हम इस वचन को साधारण भाषा में ले सकते हैं?**

यदि हम रोटी को पानी में डालें तो वह तुरन्त घुल जाएगी, और कुछ भी नहीं बचेगा! तो फिर हम उसे "बहुत दिन बाद", कैसे पा सकते हैं?

अहा, हाँ! यह इशारे वाली भाषा है!!

इस वचन में तीन चिन्हों का उपयोग किया गया है:

1. रोटी
2. जल (बहुवचन)
3. "बहुत दिन के बाद"

आइये अब हम इन चिन्हों का मतलब वचनों में देखें।

रोटी ➪ का मतलब है परमेश्वर के वचन - "आत्मिक" रोटी

(यिर्मयाह 15: 16/ मत्ती 4: 4)

जल (बहुत सारा जल या पानी) ➪ का मतलब है लोग, और भीड़ और जातियां और भाषा, जैसा की हम (प्रकाशितवाक्य 17:15) वचन में पढ़ते हैं।

"बहुत दिन के बाद" ➪ यह धरती पर परमेश्वर के राज्य की ओर इशारा करता है, जब हम पढ़ते हैं कि उस समय **सभी** पृथ्वी के रहने वाले पश्चाताप करेंगे और परमेश्वर की ओर मुड़ जायेंगे, जैसा की हम -

भजन-संहिता 22:27, 28 "पृथ्वी के सब दूर दूर देशों के लोग उसको स्मरण करेंगे और उसकी ओर फिरेंगे; और जाति जाति के सब कुल तेरे सामने दण्डवत करेंगे। क्योंकि राज्य तो यहोवा ही का है, और सब जातियों पर वही प्रभुता करता है"॥

क्या आपने देखा?

यह वचन (सभोपदेशक11:1) अभी के समय में लोगों के सामने सच्चाई की **गवाही** देने के बारे में इशारा कर रहा है, जिसके परिणाम की उम्मीद हमें **अभी** नहीं करनी है बल्कि भविष्य में उसका परिणाम हमें मिलेगा।

> इसलिए किसी को भी "सत्य के वचन को ठीक रीती से" काम में लाना है या सही तरीके से यह पहचानना है कि वो वचन कौन सी शैली में लिखा गया है ताकि सच्चाई को पाया जा सके।

जब इशारे वाली भाषा का उपयोग वचन में किया गया हो तब उस वचन का मतलब साधारण भाषा में **नहीं** समझना है और **न** ही साधारण भाषा को दृष्टान्त की भाषा ही समझना है।

आइये अब हम तीसरी "सुनहरी" चाबी पर आएं-

सुनहरी चाबी # 3

बाईबल को पढ़ने की **तीसरी** चाबी यह है कि एक-

एक विषय को लेकर पढाई की जाए और एक विषय से जुड़े वचनों को 'थोड़ा यहाँ थोड़ा वहाँ' करके बाईबल में खोजा जाए।

उदाहरण: बपतिस्मा, आत्मा, उद्धार, कलीसिया के विषय आदि।

आप आश्चर्य करेंगें की कैसे इतने बड़ी बाईबल में से एक विषय से जुड़े वचनों को खोजा जा सकता है?

यह एक बहुत बड़ा काम है!

लेकिन इन अन्त के दिनों में परमेश्वर का अनुग्रह मसीहियों पर है। हाँ! एक **विषय** से जुड़े सभी वचनों को हम खोज पाएं इसके लिए **'कन्कर्डेन्स'** की बाईबल अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध है जिसमे एक वचन से जुड़े सभी वचनों का वर्णन रहता है।

दो सबसे विश्वशनीय 'कन्कर्डेन्स' **यंग** और **स्ट्रांग** नामक दो लोगों ने लिखे हैं।

इसलिए **केवल बाईबल को** उत्पत्ति से लेकर प्रकाशितवाक्य तक के अलग-अलग अध्यायों को पढ़ने से आपको सच्चाई को खोजने में कोई मदद **नहीं मिलेगी वाकई** में क्योंकि सच्चाई बाईबल में-

"थोड़ी यहाँ, थोड़ी वहां है"।

इसलिए इस तरीके को उपयोग में लाकर बहुत ही फलवन्त और आशीषित पढाई अलग-अलग विषयों पर कि जा सकती है बाईबल में और कोई भी परमेश्वर के वचनों की सच्चाई को पा सकता है।

बाईबल को पढ़ने की **"तीन सुनहरी चाबियों"** के बारे में समझने के बाद, आइये हम देखें की बाईबल में परमेश्वर के वचनों के लिए किन -किन **चिन्हों** का उपयोग किया गया है?

"आग और हतोड़ा"

यिर्मयाह 23:29 "यहोवा की यह भी वाणी है कि क्या मेरा वचन आग सा नहीं है? फिर क्या वह ऐसा हथौड़ा नहीं जो पत्थर को फोड़ डाले"?

हाँ! यहाँ पर परमेश्वर के वचन की तुलना

"आग" और **"हतोड़े"** से की गई है।

इसका क्या मतलब है?

आग एक ऐसा तत्व है जो नष्ट भी करता है और शुद्ध भी करता है।

धातुओं को आग अशुद्धताओं से शुद्ध करता है।

इसी तरह, परमेश्वर का वचन आग की तरह **पाप** को नष्ट करता है और हृदय को हर प्रकार के पाप और अशुद्धता से **शुद्ध** करता है।

उसके बाद यहाँ पर जिस "हतोड़े" का जिक्र किया गया है वह बहुत **बड़ा** और **मजबूत** है और **बड़े पत्थरों को तोड़ने** के काम में आता है!

इसी तरह परमेश्वर के वचन भी **बहुत बड़े हतोड़े** की तरह है जो उस हृदय को तोड़ते हैं जो **पाप** और **स्वार्थ** के कारण कठोर चट्टान बन गए हैं और तोड़कर उस हृदय को परमेश्वर के वचन स्वतंत्रता देते हैं।

अब हम अगले चिन्ह को देखते हैं -

"उजियाला" (रोशनी, ज्योति)

भजन संहिता 119:105 "तेरा वचन मेरे पांव के लिये दीपक, और मेरे मार्ग के लिये उजियाला है"।

हाँ! यहाँ पर परमेश्वर के वचन के लिये **'उजियाले'** का चिन्ह उपयोग में लाया गया है।

इसका क्या मतलब है?

इस चिन्ह को ठीक से समझने के लिए हम

यशायाह 60:2 "देख, पृथ्वी पर तो अन्धियारा और राज्य राज्य के लोगों पर घोर अन्धकार छाया हु आहै; परन्तु तेरे ऊपर यहोवा उदय होगा, और उसका तेज तुझ पर प्रगट होगा"।

वचन को पढ़ते हैं।

हाँ! यह **साधारण** भाषा वाला 'अंधकार' नहीं है बल्कि एक इशारे वाली भाषा है।

पूरी पृथ्वी और उसके लोग 'अंधियारे में' हैं ऐसा कहा जा रहा है।

हम इस **'अंधकार'** शब्द का मतलब **'उजियाला'** शब्द के चिन्ह से समझ सकते हैं।

हाँ! परमेश्वर के वचन का "उजियाला" "सच्चाई" है (**यूहन्ना 17:17**)

और 'अंधकार' का मतलब है... असत्य ।

परमेश्वर का वचन "उजियाला" (सत्य) है इस पूरी पृथ्वी के लिये जो कि "अंधियारे" (असत्य) में है।

इसके बाद हम अगले चिन्ह के बारे में पढ़ते हैं - **"तलवार"**

इफिसियों 6:17 "...और आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है, ले लो"।

हाँ! इस वचन में परमेश्वर के वचन के लिये "तलवार" चिन्ह का उपयोग किया गया है! तलवार युद्ध का हथियार होता है लेकिन यहाँ पर इसका मतलब **आत्मिक** है।
जैसा की हम
इब्रानियों 4:12 "क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहु तचोखा है..."।
वचन में पढ़ते हैं, परमेश्वर का वचन दुष्टता और बुराई के खिलाफ आत्मिक युद्ध का हथियार है।

इस तलवार के **दोनों ओर** तेज धार होने का मतलब यह है कि **परमेश्वर के वचन बोलने वाले** और... **सुनने वाले** दोनों पर अपना प्रभाव डालते हैं!!

आखरी में हम अगला चिन्ह देखते हैं - "**रोटी**" (मन्ना या भोजन)

व्यवस्थाविवरण 8:3 "... इसलिये कि वह तुझ को सिखाए कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं जीवित रहता, परन्तु जो जो वचन यहोवा के मुंह से निकलते हैं उन ही से वह जीवित रहता है"

यहाँ पर परमेश्वर के वचन के लिये **'रोटी'** का चिन्ह उपयोग में लाया गया है।
हाँ! परमेश्वर का वचन 'जीवन' की रोटी है और जैसे जैसे मनुष्य की **आत्मिक उन्नति** होती है और वह **समझ** को प्राप्त करता है यह **आत्मिक रोटी अनंत जीवन** को पाने का माध्यम बन जाती है ...

आखरी में हम पढ़ते है -

2 तीमुथियुस 3:16,17 "हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है: ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए"॥

हाँ! परमेश्वर की सभी सच्चाइयों का एक सही और पूरा ज्ञान होना बहुत ही जरूरी है ... परमेश्वर की सेवा करने के लिये।

यह बहुत जरूरी है कि परमेश्वर के वचनों को **सावधानी** से **ध्यानपूर्वक पढ़ा** जाये और परमेश्वर का जन (**स्त्री** या **पुरुष**) बनने के लिये **ठीक** तरीके से वचनों की पढाई की जाये।

हाँ! आज हमने उस दिशा में पहला कदम उठा लिया है।

---आमीन!---

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com